ISSN: 2349-6002

बौद्धधर्म में वृक्ष महिमा

चुडासमा जयेशकुमार ए
संशोधन विद्यार्थी, इतिहास भवन, महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी भावनगर विश्वविद्यालय

सारांश- बौद्धधर्म में वृक्षों की महिमा केवल प्राकृतिक सौंदर्य या उपयोगिता तक सीमित नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक स्तर पर अत्यंत गहरी है। बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएँ वृक्षों के सान्निध्य में घटित होती हैं, जो यह दर्शाती हैं कि वृक्ष केवल प्रकृति के अंग नहीं, बल्कि आत्मबोध, ध्यान, शांति और ज्ञान के प्रतीक भी हैं। आधुनिक समय में भी बौद्ध धर्म में वृक्षों का महत्व अत्यंत प्रासंगिक है। आज जब पर्यावरण-संकट, ग्लोबल वार्मिंग और प्राकृतिक असंतुलन बड़े खतरे बन चुके हैं, बौद्ध दृष्टि प्रकृति के साथ सामंजस्य और करुणा का मार्ग प्रदर्शित करती है। श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार, जापान और भारत सहित अनेक देशों में बौद्ध अनुयायी बोधिवृक्ष की संतानों को रोपित करते हैं और उन्हें शांति-प्रतीक मानते हैं। समकालीन बौद्ध गुरुओं और बौद्ध आचार्यों ने वृक्ष-संरक्षण को धर्म-आचरण का हिस्सा बताया है। उनके अनुसार वृक्ष केवल सांसारिक संसाधन नहीं, बल्कि "जीवित प्राणियों" की तरह करुणा से देखे जाने चाहिए। अनेक बौद्ध संगठनों द्वारा 'इको-धर्म' या 'ग्रीन बौद्धिज़्म' के नाम से वृक्षारोपण और वन-संरक्षण अभियान चलाए जाते हैं, जिनमें प्रकृति को ध्यान-स्थल और शरण-स्थल माना जाता है। इस प्रकार, बौद्धधर्म में वृक्ष सिर्फ प्राकृतिक संरचना नहीं, बल्कि आध्यात्मिक मार्गदर्शक, ज्ञान के प्रेरक और मानवता को संतुलन, करुणा और शांति की ओर ले जाने वाले प्रतीक हैं। बुद्ध के जीवन से लेकर संघ की साधना और आधुनिक पर्यावरण-संकल्प तक, वृक्ष बौद्ध परंपरा में जीवंत आध्यात्मिक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आधुनिक समयमें भारत सरकारने वृक्षों के महत्व को समझकर वन्यकटाई पर सख्त प्रतिबंध लगाया है। वृक्षारोपण कार्यक्रम और योजनाएं का अमल हुआ है। वृक्ष ही जीवन है। इसलिए वृक्षों का जतन और संरक्षण करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

(१) प्रास्ताविक

प्राचीनयुग से मानवजीवन में वृक्षों का बड़ा महत्व रहा है। मनुष्य द्वारा ७०० से अधिक पौधों का उपयोग किया जा रहा है, जिसमें २०२ प्रजातियां मानव कल्याण हेतु, १०९ प्रजातियां पशुधन उपचार पौधों के रूप में जंगली खाद्य हेतु ८७ प्रजातियां, चारे के लिए ६५ प्रजातियां, कीट नियंत्रण के लिए ५१ प्रजातियां, संस्कृति और धार्मिक कार्यों के लिए २८ प्रजातियां, ईंधन के लिए ३० प्रजातियां, विष निवारण हेतु २३ प्रजातियां, पानी शुद्ध करने हेतु ३ प्रजातियां तथा शिकार हेतु भी ३ प्रजातियों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार हमने पाया कि वन सम्पदा विभिन्न रूपों में मानव एवं पशुधन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। भारतीय चिकित्सकों ने इन वृक्ष के औषधीय गुणों के बारे में अपने ग्रंथों में लिखा हे। और लोगों ने उसका भरपूर उपयोग किया हे। पीपल जैसे वृक्ष को देवतत्व मानकर उसकी पूंजा की जाती है। हमारे जीवन में वृक्षों की महिमा अपार हे।

ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न बीमारियों के उपचार के लिए अभी भी ८०% वन सम्पदा का खुलकर प्रयोग किया जाता है और यह परम्परागत चिकित्सा में अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुई हैं, जिसमें ७५०० प्रजातियों का प्रयोग वर्तमान में होता है। सबसे अधिक अयुर्वेद में १८००, सिद्धा में ५००, यूनानी में

४००, तिब्बती चिकित्सा में ३०० तथा आधुनिक चिकित्सा में ३० प्रजातियों का उपयोग होता है, लेकिन रसायनों के बढ़ते अंधाधुंध प्रयोग से प्रदूषण अप्रत्याशित रूप से बढ़ रहा है और जंगल एवं वन लगातार घटते जा रहे हैं। आखिर में रख रखाव की जिम्मेदारी आती है, सिर्फ गरीब, मजदूर एवं किसानों पर ? इसलिए बौद्ध धर्म में उल्लेखित एस वृक्ष महिमा को समझकर उसका जतन और संरक्षण करना हमारी जिम्मेदारी हे।

(२) बौद्धधर्म में वृक्ष महिमा

बौद्ध धर्म संसार का अब तक का अकेला ऐसा धर्म है जो प्रारम्भ से अंत तक वृक्ष एवं वृक्ष श्रंखलाओं से बंधा है। तथागत बुद्ध का संपूर्ण जीवन वृक्ष के आसपास व्यतीत हुआ हे। तथागत बुद्ध का जन्म लुम्बिनी वन में शाल वृक्ष की शीतल व सुखद छाया में हुआ था। अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करने के उद्देश्य से गृहत्याग करने के पश्चात पीपल के वृक्ष की छाया में साधनरत होकर तपस्या करते हैं। पीपल का वृक्ष प्रत्येक समय रात हो या दिन ऑक्सीजन छोड़ता है, जिसके नीचे बैठने से मन को सुखद अनुभूति प्राप्ति होती है पीपल के वृक्ष की शीतल छाया में उन्हे ज्ञान प्राप्त हुआ और इसी पीपल के वृक्ष के नीचे बुद्धत्व प्राप्त हुआ। इसी कारण इसे बोधिवृक्ष के नाम से जानते है। बौद्धधर्म में जितना महत्व पीपल वृक्ष को दिया गया है, उतना महत्व अन्य किसी भी वृक्ष को नहीं दिया गया है। यज्ञ के लिए काटे गए हजारों वृक्षों के विनाश और पशुहिंसा को देखकर उसने यज्ञ कार्य का विरोध किया था। साथ ही वन्यस्थान में रहे पेड़ को बचाने और शांत प्रकृति के लिए विहार को वन्यस्थानमें बनाने का निर्देश किया।

बौद्धधर्मी सम्राट अशोक ने सार्वजनिक मार्गों पर प्रत्येक २७ मीटर की दूरी पर पांच वृक्ष- पीपल, बरगद, आम, शाल, अशोक लगवाए। राहगीरों को छांव देकर मानवीय रूप से उत्तम एवं कल्याणकारी कार्य थे।

सारनाथ में आम के वृक्ष के नीचे तथागत बुद्ध ने प्रथम उपदेश (धर्म चक्र प्रवर्तन) दिया। श्रावस्ती के जेतवन में पच्चीस वर्षाकाल व्यतीत किए। जेतवन विहार को अनाथपिंडक द्वारा ५४ करोड़ स्वर्ण मुद्राएं (कर्षापण) खर्च करके भिक्खु संघ के लिए खरीदकर बनवाया। इसी प्रकार के ४२ और वन भिक्खु संघ के लिए दानस्वरूप प्राप्त हुए थे, जिनमें वैशाली की नगरवधू आम्रपाली का आम्बवन और राजवैद्य जीवक का जीवकवन भी सम्मिलित है।

कुशीनगर के दो शाल वृक्षों के मध्य तथागत बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया। यही शाल वृक्ष मानव कल्याण के लिए आदि से अंत तक बहुत उपयोगी पाये गए हैं। अतः गौतम बुद्धने पर्यावरण, वन्यजीव से लेकर मानव कल्याण के लिए अत्यंत लाभकारी कार्य किया है।

मगध देश की चारिका करते हुए वहां के सुन्द धान के खेतों में अच्छी तरह कतारबद्ध क्यारियों को देखकर गौतम बुद्ध प्रसन्नचित होकर आनंद से कहते हैं

"आनंद! देखते हो क्या ? मगध के इन सुव्यवस्थित क्यारी बद्ध खेतों को ?"

"हाँ भन्ते !"

"आनंद! क्या तुम अपने भिक्षुओं के लिए इस तरह के चीवर (बौद्ध भिक्षु ओं द्वारा पहने जाने वाला कायाष वस्त्र) बना सकते हो ?"

इस प्रकार गौतम बुद्ध के मन मे चीवर बनाने का उत्तम विचार आया जो कि एक सौहार्दमयी प्रकृति का सूचक है। गौतम बुद्ध संसार के महानतम ऐतिहासिक महापुरुष हैं। यह कहना अर्धसत्य ही माना जएगा कि उन्होंने मानव समाज की समस्याओं के

निराकरण के लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया बल्कि वास्तविकता यह है कि उन्होंने अपना समस्त जीवन वनों एवं वन्य जीवन से सम्बंधित मिथ्याधारणाओं का खण्डन करते हुए उनके संरक्षरण के कार्य को ईमानदारी से संरक्षित करने के नियम बनाये। बुद्ध ने अपना समस्त जीवन वनों एवं उद्यानों में व्यतीत करते हुए लोगों को उपदेश दिए। अतः गौतम बुद्ध और उनके धम्म को वृक्षों से अलग नहीं किया जा सकता। यहां मैंने उनके जीवन से सम्बंधित कुछ वृक्षों का वैज्ञानिक और पर्यावरणीय विश्लेषण दिया है जो निम्नलिखित हैं-

(३) महात्मा बुद्ध के जीवन सम्बंधित वृक्षों

(३.१) पीपल वृक्ष

पीपल वृक्ष को बौद्ध अनुयायी बोधिवृक्ष के नाम से सम्बोधित करते हैं। इसी वृक्ष के नीचे बैठकर सिद्धार्थ ने ज्ञान प्राप्त किया। पीपल पर्यावरणीय हिमायती होने के कारण ही हिंदू, बौद्ध, जैन, सिक्ख और मुस्लिम धर्मावलम्बियों द्वारा बौद्ध विहारों, मंदिरों, मस्जिदों और श्मसानों के आसपास पीपल के वृक्ष अवश्य लगाए जाते हैं। आयुर्वेद की सुश्रुत संहिता और चरक संहिता में पीपल के औषधीय गुणों के बारे में बताया गया है। पीपल की पत्तियों एवं छाल का इस्तेमाल करके ज्वर, अस्थमा, खांसी, चर्म रोगों जैसी समस्याओं से निजात मिल जाती है। पीपल सबसे अधिक ३००० वर्षों तक जीवित रह सकता है। महेंन्द्र और संघमित्रा द्वारा लगाया गया पीपल वृक्ष (बोधिवृक्ष) आज भी श्रीलंका के अनुराधापुर में सुरक्षित है। अनुराधापुर के इसी वृक्ष से सन् १९५४ में बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर द्वारा लाया गया पौधा अम्बेडकर भवन, नई दिल्ली में आरोपित किया गया है। कुछ लोग मानते हे कि पीपल वृक्ष के नीचे शैतान होता है लेकिन यह मान्यता बिल्कुल ही झूठी हे। उसको अपने मन में ऐसी शैतान स्वरूप मान्यता है उसको दूर करने की जरूरत हे।

बौद्ध जातक कथाओं में पीपलवृक्ष का वर्णन मिलता हे। बौद्ध धार्मिक स्थानों पर भी पीपल वृक्ष को पत्थर और दीवार में तराशा गया हे। अजंता-इलोरा और खंभालिदा की गुफाओं, सांची स्तूप का प्रवेशद्वार (तोरण), में भी पीपल वृक्ष दृश्यमान होता हे। भरहुत के बौद्ध दर्शनीय स्थल (स्तूप) पर पीपल वृक्ष शिलाओं पर चित्रित किया गया है। नागार्जुनकोण्डा के पुरातत्व संग्रहालय में बुद्ध को पीपल वृक्ष के समक्ष सुजाता द्वारा दी गई खीर खाते हुए दिखाया गया है। उत्खनन से मिले अवशेष, सिक्के, हाथीदांत के शिल्पांकन की तरहों में भी पीपल वृक्ष दृश्यमान हैं। विदेश में रहे बौद्ध स्थानों पर भी पीपल वृक्ष को दर्शाया गया हे। बौद्ध साहित्य में बुद्ध और पीपल को लगातार एक दूसरे का पर्याय मानते हैं और पीपल का आकार देकर कई स्थानों पर बौद्ध स्मारक बनाए गए हैं। आधुनिक युग में भारतरत्न पुरस्कार में भी पीपल का पान दृश्यमान किया गया है। जो बौद्ध धर्म में रही पवित्रता को दर्शाता हे।

(३.२) शाल वृक्ष

प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है, कि गौतम बुद्ध का जन्म लुम्बिनी वन में शाल वृक्ष के नीचे तथा महापरिनिर्वाण भी कुशीनगर में दो शालवृक्षों के मध्य में हुआ था। गंधार क्षेत्र से प्राप्त शिलाओं पर अंकित वृत्तांत से स्पष्ट होता है कि गौतम बुद्ध ने दो शाल वृक्षों के मध्य विश्राम किया जिसमें वह एक पैर के ऊपर दूसरा पैर रखे हुए सिंह सैय्या में लेटे हुए दिखाया गया है। यह कृतियां राष्ट्रीय संगृहालय कलकता में रखी हुई हैं। इसी प्रकार का प्रमाण अजंता की गुफा संख्या १६ में भी मिलता है।

(३.३) आम वृक्ष

आम वृक्ष का भी बौद्धधर्म में बड़ा महत्व रहा है। बुद्ध ने सारनाथ में स्थित आम्बवन के एक आम वृक्ष के नीचे ही सर्वप्रथम उपदेश देते हुए भिक्षु संघ की स्थापना की थी। सारनाथ के धम्मेख स्तूप पर

आम के पत्ते को आधार बनाकर मूर्तिकला के माध्यम से साज-सज्जा की गई है। आम की पत्तियों से बेल-बूटियां बनाने की प्रथा का प्रचलन बौद्ध स्थान सारनाथ एवं काशी से ही हुआ है। वैशाली की गणिका आम्रपाली ने बुद्ध को आम्रपेड़ों से युक्त विहार दान किया था। बौद्ध गुफाओं में इस घटना के शिल्पांकन मिलते हे।

आम फलों का राजा होने के साथ ही राष्ट्रीय फल भी है। आम को "कल्प वृक्ष" अर्थात मनोवांछित फल देने वाला भी कहते हैं। हमारे रीति-रिवाजों, हवन, यज्ञ, पूजा, कथा, त्यौहार तथा विवाह जैसे महत्वपूर्ण कार्यों में आम की लकड़ी, पत्ती, फूल हमारे लिए उपयोगी हैं। आम के पके फल अत्यन्त स्वादिष्ट होने के साथ ही पाचक एवं बलप्रद होते हैं। भारतीय आम की ह्वेनसांग तथा अलेक्जेंडर ने इसके गुणों के कारण ही प्रशंसा की है।

(३.४) बरगद वृक्ष

कपिलवस्तु स्थित न्यग्रोधाराम में तथागत बुद्ध के जीवन का १५वां वर्षाकाल इस वृक्ष से सीधे जुड़ा है। तथागत ने रोहिणी नदी के तट पर दो बरगद वृक्षों के पास कंथक घोड़े के साथ ही अपने केशों को भी त्यागा था। सारनाथ मे धर्मचक्र प्रवर्तन करते समय बरगद वृक्ष के नीचे विश्राम किया था। राजा शुद्दोधन से भेंट के समय का दृश्य बरगद वृक्ष के साथ दिखाया गया है। सुजाता ने खीर भी बरगद के नीचे ही खिलाई थी। यहीं से खीर गृहण कर सिद्दार्थ उस पीपल वृक्ष के नीचे जाकर समाधिस्थ हो गए, जहां उन्हें बुद्धत्व प्राप्त हुआ।

भारत में बरगद के पेड़ को पवित्र माना जाता है। यह पेड़ बहुत बड़ा एवं विशाल होता है। बरगद के पेंड़ की शाखाओं से लटाएं लटककर जमीन तक पहुंच आती हैं और तने का रूप ले लेती हैं। यह पेड़ जितना पुराना होता जाता है, उतना ही विशाल होता जाता है।

(३.५) जामुन वृक्ष

बौद्ध स्थापत्य में जामुन वृक्ष को दर्शाया गया है। जिसमें जामुन के पेड़ के नीचे ८ दासियां लेटे हुए तथागत का उपचार कर रही हैं। इसमें दहिनी ओर महाराज सुद्दोधन तथा महाप्रजापति गौतमी को भी दिखाया गया है। यह वृक्ष हर समय हरा-भरा रहता है। फलों के अतिरिक्त शीतल छाया भी प्रदान करता है। जामुन के वृक्ष की विशेषता है कि पुरानी पत्तियां झड़ जाने से पूर्व ही नई पत्तियां उग जाती हैं। आयुर्वेद के अनुसार मधुमेह रोग के उपचार में जामुन के फल, गुठलियां, छाल, लकड़ी, जड़ और पत्ती उपयोगी होती है। जामुन का सिरका मधुमेह रोगियों के लिये अत्यंत उपयोगी होता है।

(३.६) खजूर वृक्ष

जब सिद्धार्थ १६ वर्ष के थे, तब यशोधरा (गोपा) के पिता दण्डपाणि ने उस समय की मान्यताओं के अनुरूप यशोधरा का स्वयंम्बर आयोजन किया। जिसमें तीरनदाजी (धनुर्विद्या) सहित अन्य कलाओं को सिद्धार्थ ने पूर्ण किया। उन्होनें अपने तीर से खजूर के पेड़ पर निशाना लगाया तथा पेड़ धराशायी हो गया। इस प्रकार के दृश्य जावा की सांस्कृतिक धरोहर बोरोबूदर स्तूप में स्थित हैं। जो तथागत गौतम बुद्ध के जीवन सम्बंधित हैं,

इसके अतिरिक्त अन्य वृक्षों जिनका वर्णन बौद्ध साहित्य तथा शिलालेखों में मिलता है जैसे-कदम्ब, सिरस, अर्जुन वारो, आंवला, बेल, पलाश, ढ़ाक, केला, चंदन, गूलर, बटर फूट, सेमल, कचनार, कभ्रो, कटहल, अमलताश। यह पेड़ पर्यावणीय एवं औषधीय दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं।

(४) बौद्धधर्म संबंधित वन

महात्मा गौतम बुद्ध और बौद्धधर्म का वनों से महत्वपूर्ण सम्बंध रहा है। बौद्ध सहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है, कि महात्मा बुद्ध को राजा

एवं उपासकों द्वारा ४२ विहार (वन) मुख्यतः दान स्वरूप प्राप्त हुए थे। इन विहारों में स्थित पेंड़ पर्यावरण संरक्षण के साथ ही औद्योगिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

(४.१) लुम्बिनी वन

यह वन का विशेष महत्व रहा है। ये वह पवित्र वन हे जहां संपूर्ण एशिया खंड के ज्योतिपूज वैशाखी पूर्णिमा के दिन प्रगट हुए थे। नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु एवं देवदह राज्यों के मध्य विशाल वन फैला हुआ था। इसी वन में सिद्धार्थ का जन्म हुआ था। यह वन इतना सुंदर था, कि कपिलवस्तु एवं देवदह के राजकुमार, श्रेष्ठिजन तथा आमात्यपुत्र यहीं पर अमोद-प्रमोद तथा प्रकृति की मनोरम छटा की शोभा निहारने के लिए आते रहते थे।

(४.२) महावन

बौद्ध साहित्य में हमें तीन महावनों का वर्णन मिलता है जिसमें वैशाली, उरुवेला तथा कपिलवस्तु के नाम महत्वपूर्ण हैं (१) वैशाली महावन में बुद्ध ने अपने जीवन का अंतिम ४६वां वर्षाकाल व्यतीत किया था। (२) उरुवेला महावन में बुद्ध ने ५ वर्षाकाल व्यतीत किये थे। इसी वन में बुद्ध ने आनंद को सम्बोधित किया था। यह महावन मल्ल गणराज्य के अंतर्गत आता था। (३) कपिलवस्तु महावन में गौतम बुद्धने बौद्ध संघ को भौगोलिक क्षेत्रों का ज्ञान प्रदान किया था। यह वन हिमालय पर्वत से वैशाली नगर तक फैला हुआ है। इस तरह से तीन महावन का बौद्ध धर्ममें विशेष महत्व रहा हे।

(४.३) जेतवन

यह वन श्रावस्ती के राजकुमार जेतकुमार का था, अनाथपिण्डक नामक व्यापारी ने इस वन को १८ करोड़ स्वर्ण मुद्राओं में खरीदकर बौद्धसंघ को भेट स्वरूप दिया था। इसी वन में करैरी कुटी, कोसम्बी कुटी और गंधकुटी नामक तीन भिक्षु कुटियां बनी थीं । राजा प्रसेनजित ने यहीं पर सलाल कुटी का निर्माण करवाया था। गौतम बुद्ध ने इसी वन की गंधकुटी में २१वां, २५वां तथा ४५वें वर्षाकाल व्यतीत किए थे। इसलिए बौद्धधर्म में जेतवन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

(४.४) वेणुवन (राजगृह)

राजगृह में बसा वेणुवन का बौद्धधर्म विशेष महत्व रहा है। वेणुवन वेणु (बांस) के वृक्षों का वन था, जो कंचनगला के वेणुवन मध्यक्षेत्र के पूर्वी हिस्से तक फैला था। मगधराज बिम्बिसार ने बुद्ध एवं उनके भिक्षुसंघ को यह वन भेट स्वरूप दिया था। यहां पर महात्मा बुद्धने दूसरा, तीसरा, चौथा वर्षाकाल व्यतीत किया था।

(४.५) न्यग्रोध वन (कपिलवस्तु)

इस वन में तथागत गौतम बुद्ध ने अपना १५वां वर्षाकाल व्यतीत किया था। बुद्धत्व प्राप्त करने के पश्चात पहली बार बुद्ध का मिलाप पिता शुद्दोधन से यहां पर हुआ था। बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने भी इस स्थान का भ्रमण किया था। और अपने ग्रन्थों में इस स्थान का वर्णन किया है।

(४.६) आम्बवन

वैद्ध आचार्य जीवक ने राजगृह में स्थित अपना विशाल आम्बवन महात्मा बुद्ध को भेट किया था। तथागत बुद्ध के पुत्र राहुलने अपने जीवन के अंतिम दिन इसी वन में व्यतीत किए।

(४.७) आम्बपाली वन :-

वैशाली नगर के दक्षिणमें स्थित इस वन में गौतम बुद्धने अंतिम वर्षाकाल व्यतीत किया था। इसी वन में विश्राम करने के उपरान्त महात्मा बुद्धने महापरिनिर्वाण हेतु कुशीनगर की ओर प्रस्थान किया था। नगरवधू आम्रपाली ने महात्मा बुद्ध तथा भिक्षुसंघ को यहीं पर भोजन अर्पित किया था।

(४.८) अंधवन

यह वन कोसल की राजधानी श्रावस्ती में स्थित है, जो कि हरे भरे वृक्षों से सदा शोभायमान रहता है। इसमें वृक्ष एवं उनकी पत्तियां इतनी घनी होती थीं, कि सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक नहीं पहुंच पाता था। यहां का शीतल वातावरण बौद्ध भिक्षुओं के विपश्यना (एक प्रकार की ध्यान साधना) के लिए सर्वाधिक उपयुक्त रहता था।

बौद्ध काल में जिस धनाढ्य के पास जितना बड़ा वन होता था। समाज में उसकी उतनी अधिक आर्थिक प्रतिष्ठा होती थी। समाज में व्याप्त इस धारणा के कारण उपवन लगाने के कार्य को खूब प्रोत्साहन मिला।

(५) व्याधि निवारणमें वृक्षों का महत्व (बौद्धधर्म के विशेष संदर्भ में)

बौद्ध पर्यावरण पारिस्थितिकी का मानव कल्याण के रूप में एक महत्वपूर्ण अंग व्याधि निवारण है।, क्योंकि इसके लिए उपयुक्त औषधियां हमे पेड़-पौधों द्वारा ही अर्जित होती है, जो कि दुःखी समाज को सुखी और शांत रखने का महत्वपूर्ण माध्यम है। वास्तव में शरीर रोगों का घर है (शरीरं व्याधि मंदि)। बुद्ध का व्याधि क्षेत्र व्यापक है। संसार के सभी सत्वों का आधार भोजन है, जिसकी अधिकता तथा कमी रोगों का कारण बनती है। भैषज्य को प्रचीन काल में आयुर्वेद के रूप में प्रतिष्ठित किया गया गया था। विनय पिटक के अनुसार प्रत्येक भिक्षु-भिक्षुणी को भैषज्य ज्ञान होना अनिवार्य था।

तथागत ने बीमार भिक्षुओं का वानस्पतिक औषधियों से उपचार करके चिकित्सा का मार्ग प्रशस्त किया। धम्ममार्गी सम्राट अशोक के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि उसने मनुष्यों और पशुओं की चिकित्सा हेतु औषधियां लगवायी और सड़कों एवं सार्वजनिक स्थलों पर पेड़-पौधें लगाए।

पेड़-पौधों का महत्व बतलाते हुए तक्षशिला में जीवक के गुरू वैद्यराज ने जीवक से ऐसा पौधा लाने को कहा जिसका कोई औषधीय मूल्य न हो। जीवक तक्षशिला में कई योजन घूमने के पश्चात कोई ऐसी वनस्पति नहीं खोज पाये जिसका औषधीय महत्व न हो, अर्थात जीवक और उसके गुरू के मध्य हुए प्रसंग को बतलाने का तात्पर्य यह है कि हमारे परिवेश में जो भी पेड़-पौधे हैं, वह अमूल्य प्राकृतिक धरोहर है, जिसका पर्यावरणीय और औषधीय महत्व है, जिसके उपयोग से मनुष्य स्वयं को निरोगी बना सकता है। इन पेड़-पौधों को संरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है।

(६) समापन

प्राचीनकल से बौद्धधर्ममें वृक्षों की महिमा को दर्शाया गया है। महात्मा गौतम बुद्ध का संपूर्ण जीवन वृक्ष के आसपास बीता हुआ है। गौतम बुद्ध ने ढाई हजार वर्ष पूर्व कहा था, कि "पेड़ों में भी जीवन है।" वे लोग मूर्ख हैं, जो पेड़ पौधों को काटते हैं। लोग ताड़ वृक्षों को काटकर उनके पत्तों से पादुकाएं बनाते थे, जिसे महात्मा बुद्ध ने रोंका और दूषित कृत्य बताया क्योंकि पेड़ काटने से जीव हिंसा होती है।

विनय पिटक के अनुसार बौद्ध भिक्षुओं को पौधों से पत्ती, फल-फूल इत्यादि तोड़ना नहीं चाहिए। पेड़ से अलग हुए फलों, पत्तियों एवं लकड़ियों का ही प्रयोग करना चाहिए अन्यथा नहीं। और "बचा हुआ भोजन हरियाली पर न डाला जाए, क्योंकि इससे हरियाली नष्ट हो जाती हैं" ऐसा निर्देश किया है।

लेखक सुमन एवं साथीने अपने ग्रन्थ “भगवान बुद्ध” में वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर एक भिक्षु अपना उद्गार प्रकट करते हुए कहता है- ‘नई वर्षा से सिक्त हो पर्वतों पर वृक्ष लहराते हैं, यह ऋतु एकांत वन में मुझे अधिकाधिक स्फूर्ति प्रदान करती है’। महाकश्यप भिक्षुको भी वन और पर्वत से काफी लगाव था। वह उद्गार प्रकट करते हुए कहते हैं कि “वरना के पेडों

की पंक्तियों से विखत रूप से भरे मनोरम भूमि भाग वाले कुंजनों से युक्त एवं रमणीय वे पर्वत हमें प्रिय हैं। इस तरह बौद्धधर्म और संघ में भी वृक्षों की अपार महिमा को प्रगट किया गया है।

वर्तमान समय में इंसान अपने निजी स्वार्थ के लिए वृक्षों का विनाश कर रहा है। जिससे बहुत से वन्यस्थल नष्ट हो गए हैं। वन्य प्राणियों और पक्षियों का आश्रय स्थान नष्ट होने से बहुत से वन्यजीव और पक्षी विलुप्त हुए हैं। वन्य औषधी का नाश होने से नए रोग का निवारण बहुत ही जटिल हुआ है। वातावरण में प्रदूषित वायु का प्रमाण बढ़ने से श्वास से संबंधित बीमारियां पैदा हुए है। ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पैदा हुई है। इसी भयंकर स्थिति के निवारण के लिए हमे महात्मा गौतम बुद्ध ने दर्शाई हुए निर्देशों का पालन करना चाहिए। वृक्षों के प्रति प्रेम और आदर रखना चाहिए। पवित्र प्रसंगों पर पेड़ लगाकर उसका जतन और संरक्षण करना चाहिए। ऐसा करने से ही इस भयंकर परिस्थिति का निवारण हो सकता है। वृक्ष ही जीवन है इसलिए वृक्षों का जतन और संरक्षण करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

संदर्भ

[1] सुमन एवं साथी, परम्परागत जीव-जंतु एवं पर्यावरण संरक्षण में बौद्ध धर्म, १९९९

[2] सुमन एवं साथी, भगवान बुद्ध सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९९

[3] डॉ. धर्मकीर्ति, महान बौद्ध दार्शनिक, सम्यक प्रकाशन, २०२०.

[4] सांकृत्यायन, राहुल, महामानव बुद्ध, भारतीय बौद्ध समिति, लखनऊ, १९९३

[5] पाण्डेय, गोविन्दचंद्र, बौद्धधर्म के विकास का इतिहास, उतरप्रदेश हिंदी संस्थान, २०१५

[6] रघुनाथ सिंह, बुद्ध कथा, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, १९६८

[7] भट्टाचार्य, एस, युवाओं के लिए बुद्ध, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, १९९८

[8] उपाध्याय, भरतसिंह, बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, हिंदी साहित्य सम्मेलन, २०१८

[9] मदन मोहन सिंह, बुद्धकालीन समाज और धर्म, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, १९७२

[10] प्रिय सेन सिंह, भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थ-स्थल, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, १९९३

[11] राधेश्याम सिंह, बौद्ध कालीन भारत, विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, २०१८

[12] त्रिपाठी, हवलदार, बौद्धधर्म और बिहार, राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, १९६०